(शिर्क–ओ–बिद्अ़त के ख़िलाफ़ ऐलान–ए–जंग)

/(सर्वाधिकार लेखकाधीन)

फ़ज़ाएल–ए–आ़माल
या
बरबादी–ए–आ़माल

लेखक
खुर्शीद अ़ब्दुर्रशीद 'मुहम्मदी' (एम0ए0)

(इस किताब के सारे हवाले हमारे पास मौजूद हैं)

प्रथम बार – 1000 प्रतियां

प्रकाशित – नवम्बर, सन् 2011 ई0

सहयोग राशि – 35/ – रू0

प्रकाशक

प्त्क्ष्

इस्लामिक रिसर्च एण्ड दा'वा सेन्टर

न्दकमत.प्ेंउपब ॅमसंितम ैवबपमजलए डपत्रंचनत ;त्महण्छवण्1167द्ध

कटरा कोतवाली के पीछे, मुहम्मदी गली
मिर्ज़ापुर – 231001 (यू0पी0)
मो0 – 9919737053

—:बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीमः—

मेरे दीनी भाईयो! अस्सलामु अ़लैकुम वरहमतुल्लाह वबरकातहू।

लीजिए एक और गुमराह किताब (फ़ज़ाएल—ए—आ़माल) जो कि तब्लीग़ी जमाअ़त के जनाब मुहम्मद ज़करिया साहब की लिखी हुई है, के भी चन्द नमूने आपके बीच पेश कर रहा हूॅ जिन्हें पढ़कर आप इन्शाअल्लाह हैरान हो जायेंगे कि तक़वा—तौहीद का दम भरने वाले और अल्लाह—रसूल वाली जमाअ़त कहने वाले इन हज़रात की इस **मुक़द्दस किताब** (उनकी नज़रों में) में किस तरह के ऊल—जलूल और झूठे क़िस्से—कहानियों व ख़्वाबों का नाम ले—लेकर झूटी बातें व बकवास भरी गई हैं। कुरआन—हदीस के ख़िलाफ़ बातें बल्कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की शान में गुस्ताख़ियां तक की गई हैं।

हमारा मक़सद सिर्फ़ इस्लाह है और हमारी दाअ़्वत सिर्फ़ और सिर्फ़ कुरआन—ओ—सुन्नत है। हमारी ये किताब पढ़कर अगर किसी को बुरा लगे या गुस्सा लगे तो उसके लिए

हम सिर्फ़ अल्लाह से दुआ़ कर सकते हैं कि अल्लाह उसे सही बात समझने की तौफ़ीक़ दे। (आमीन)

हमारे सामने इस वक़्त फरीद बुक डिपो–422, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली–110006 की छपी हुई फ़ज़ाएल–ए–आ़माल (भाग–1 व 2) मौजूद हैं जो कि सन् 1997 ई0 में छपी हैं। हम सारे हवाले इसी से पेश कर रहे हैं और इस किताब के कवर पर उसकी फोटो भी दे दे रहे हैं। फ़ज़ाएल–ए–आ़माल के भाग 1 में **तम्हीद** में पेज नं0 17 पर लिखा है कि :– ''सफर 1357 हि0 में **एक मर्ज़ की वजह** से चन्द रोज़ के लिये **दिमाग़ी काम** से रोक दिया गया तो मुझे ख़्याल हुआ कि इन खाली अय्याम को इस बाबरकत मशग़िला में गुजार दूँ कि अगर ये अवराक़ **पसन्द–ए–ख़ातिर न हुए** तब भी मेरे ये खाली अवक़ात तो बेहतरीन और बाबरकत मशग़िला में गुज़र ही जायेंगे।'' **कुछ समझा आपने?** यानि कि ज़करिया साहब को कोई दिमाग़ी मर्ज़ हो गया तो डॉक्टर वग़ैरह ने दिमाग़ी काम करने के लिए (कुछ दिनों तक) मना कर दिया

था तो ये साहब उसी पीरियड में ये किताब लिखने बैठ गये। हो सकता है कि उसी दिमाग़ी ख़राबी की वज़ह से इस किताब में उट–पटांग बातें लिखी गयी हों, ख़ैर ....।

1. ''हुज़ूरे अक़्दस (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने एक मर्तबा सींगियां लगवायीं और जो खून निकला वो हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि0) को दिया कि इसको कहीं दबा दें। वो गये और आकर अर्ज़ किया कि दबा दिया। हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने दर्याफ़्त फ़रमाया–कहॉ? अ़र्ज़ किया **मैंने पी लिया।** हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि **जिसके बदन से मेरा खून जायेगा उसको जहन्नम की आग नहीं छू सकती** ....कुछ आगे लिखा ....हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के फ़ोज़लात पाख़ाना पेशाब वग़ैरह सब पाक हैं।'' (लाहौल वला कुव्वत) (बारहवां बाब, हुज़ूर अक़्दस (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के साथ मुहब्बत का नमूना, वाक्या नं0 5 पेज–162)

नोटः–**मैं पूरी तब्लीग़ी जमाअ़त को चैलेंज करता हूँ कि किसी भी सही हदीस में ये वाक़्या दिखला दें।** खून तो खून, पेशाब,

पाख़ाना भी पाक बता दिया, अगर ज़करिया साहब उस दौर में होते तो शायद ये पेशाब–पाख़ाना भी इस्तेमाल कर लेते और उसे जहन्नम से निजात का सबब समझते। अल्लाह तआ़ला ने कुरआन में खून को हराम करार दिया है, (देखिये– सूरः बकरः, आयत–173, सूरः माएदह, आयत–3, सूरः नहल, आयत–115)। लेकिन ज़करिया साहब को देखिये कि वो सहाबा को ही खून पिलवा रहे हैं। (अल्लाह की पनाह)

2. ''हुजूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) का इरशाद है, बड़ा क़ाबिल–ए–रश्क है वो मुसलमान जो **हल्का–फुल्का हो (यानि घर–परिवार का ज़्यादा बोझ न हो)** नमाज़ से वाफ़िर अर्थात् अत्यधिक हिस्सा उसे मिला हो, रोज़ी सिर्फ़ गुज़ारे के क़ाबिल हो जिस पर सब्र करके उम्र गुज़ार दे, अल्लाह की इबादत अच्छी तरह करता हो। गुमनामी में पड़ा हो, **जल्दी से मर जावे,** न मीरास ज़्यादा हो, **न रोने वाला ज़्यादा हों।''** (मुसीबत व परेशानी के वक़्त नमाज़, फ़ज़ाएल–ए–नमाज़, पेज–195)

नोटः– **परिवार–नियोजन** की कितनी प्यारी ताअ्लीम ज़करिया साहब अल्लाह के नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की तरफ़ मंसूब करके दे रहे हैं कि ''अहल–ओ–अ़याल यानि कि घर–परिवार का **ज़्यादा बोझ न हो, हल्का–फुल्का हो** फिर आगे ये लिख रहे हैं कि **जल्दी से मर जावे।** क्या कहना चाहते हैं कि खुदकुशी कर ले? एक होता है अपनी मौत मरना और एक है जल्दी से मर जावे, अब आप ही बताएं कि अगर हमारी मौत देर से हो तो हम जल्दी से कैसे मरेंगे? और फिर ये कि **मर जावे** यानि कि खुदकुशी कर लेवे। **क्या ऐसी बात (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) कह सकते हैं? हर्गिज़ नहीं।**

नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) कर इरशाद है कि ''अगर कोई मेरी तरफ मंसूब करके ऐसी बात कहे जो मैंने नहीं कही है तो उसका ठिकाना जहन्नम है।'' (मुत्तफ़क़ अ़लैह)

3. हज़रत इमाम आज़म (रह0) का किस्सा मशहूर है कि वुज़ू का पानी गिरते हुए ये महससू फ़रमा लेते थे कि कौन से

गुनाह धुल रहा है ....।(फ़ज़ाएल –ए–नमाज़,नमाजी के हर–हर हिस्सा जिस्म के गुनाहों की माफ़ी है, पेज–196)

नोटः– अब लीजिये ज़करिया साहब के झूठ का एक और पुलिन्दा। वुज़ू का पानी गिरते हुए देखकर इमाम अबू हनीफ़ा (रह0) ये महसूस कर लेते थे कि कौन सा गुनाह धुल रहा है (सग़ीरा या कबीरा)? या फिर ये मतलब हुआ उस शख़्स का कौन सा गुनाह था जो उसने किया था वो धुल रहा है, क्योंकि वुज़ू से कबीरा गुनाह तो मिटते नहीं। मैं पूछना चाहता हूॅं कि क्या कभी ऐसा दावा अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने भी किया था या कोई एक भी सही रिवायत ऐसी है? **ये झूठ बोल–बोलकर लोगों को 'नमाज़ के फ़ज़ाएल' बयान करेंगे।**

4.''हज़रत सूफियान सूरी (रज़ि0) पर एक मर्तबा **ग़ल्ब–ए–हाल** हुआ तो 7 रोज़ तक **घर में रहे न खाते थे न पीते थे न सोते थे.......'।** (फ़ज़ाएल–ए–नमाज़, दूसरी फ़सल–नमाज़ को छोड़ने पर जो वअ़ीद और अ़ताब हदीसों में आया है, उसका बयान, पेज–223)

नोटः— देखा आपने! ज़करिया साहब **<u>सूफ़ियों के 'हाल'</u>** को किस तरह से सही साबित कर रहे हैं कि **<u>'ग़ल्ब—ए—हाल'</u>** हुआ तो 7 दिनों तक घर से नहीं निकले (नमाज़—ब जमाअ़त कहाॅ गयी?) न खाया न पिया न सोये, ये कौन सी इबादत है? अल्लाह के नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) पर क्या कभी **<u>'ग़ल्ब—ए—हाल'</u>** हुआ था? कया उन्होंने कभी ऐसी ताअ़्लीम दी है? किसी ख़लीफ़ा के साथ ऐसा कभी हुआ? ये ज़करिया साहब ने सूफीज़्म को भी क्या ही अच्छे ढंग से इस्लाम में साबित करने की कोशिश की है, जबकि ये जग—ज़ाहिर है कि सूफ़ीज़्म का **<u>इस्लाम से कोई मतलब नहीं</u>** और सूफ़ी या सूफ़ीज़्म को **<u>मानने वाले इस्लाम के मुन्किर हैं।</u>** नोट :— तफ़सील से इनकी हक़ीक़त जानने के लिये सी0डी0 देखें सूफ़ीज़्म और इस्लाम।

5. **<u>''एक सय्यद साहब</u>** का क़िस्सा लिखा है कि **<u>12 दिन एक ही वुज़ू से सारी नमाज़ें पढ़ीं और 15 बरस तक मुसलसल लेटने की नौबत नहीं आयी। कई—कई दिन ऐसे गुज़र जाते</u>**

<u>कि कोई चीज़ चखने की नौबत न आती थी।''</u> (फ़ज़ाएल–ए–नमाज़, तीसरा बाब, खुशूअ़ व खुजूअ़ के बयान मे पेज–245)

नोटः– **<u>ये सय्यद साहब कौन थे?</u>** कुछ पता नहीं। बस–**<u>''एक सय्यद साहब का किस्सा''</u>** लिखकर मनगढ़न्त बात लिख दिया। न जाने किस दीन की तब्लीग़ ज़करिया साहब कर गये हैं। फिर, मेरी समझ में ये नहीं आता कि इन सय्यद साहब को ये सज़ा किसने दी थी? कि न तो सोएं, न खाएं, न पियें और न ही पेशाब–पाख़ाना या हवा ही ख़ारिज करें। **<u>क्या डॉट लगा रखी थी?</u>** ये भी भला कोई इबादत है? आईये ज़रा प्यारे नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) का इस बारे में इरशाद सुनते चलें – ''एक बार 3 सहाबी (रज़ि0) आयशा (रज़ि0) के पास जाकर अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की इबादत का हाल पूछा। फिर उसमें से एक ने कहा कि मैं कभी रातों में नहीं सोऊॅगा और पूरी रात जागकर नफिलें पढ़ूॅगा, इबादत करूॅगा। दूसरे ने कहा मैं शादी ही नहीं करूॅगा और पूरी ज़िन्दगी इबादत करूॅगा। तीसरे ने कहा मैं हमेशा रोज़े ही

रखूँगा। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने जब ये सुना तो कहा—''मैं तुममें सबसे ज़्यादा अल्लाह से डरने वाला हूँ पर मैं रातों में जागता (इबादत करता) भी हूँ और सोता भी हूँ और मैं रोज़े रखता भी हूँ और नहीं भी रखता हूँ और मैंने शादी भी की है, तो जो ऐसा नहीं करेगा वो हम में से नहीं। (सहीह बुख़ारी, सहीह मुस्लिम)

अब आप हज़रात इस हदीस की रोशनी में ज़करिया साहब की ताअ़लीम को अच्छी तरह परख और समझ सकते हैं कि **ये इस्लाम की तब्लीग़ करके गये हैं या कि यहूदियत और इसाईयत की।**

6. ''इमाम अहमद बिन हंबल (रह0) जो फ़िक़्हः के मशहूर इमाम हैं दिन—भर मसाएल में मशगूल रहने के बावजूद रात—दिन में **300 रकअ़त नफिल पढ़ते थे।** हज़रत सअ़ीद बिन जुबैर एक रकअ़त में पूरा कुरआन शरीफ़ पढ़ लेते थे''।

नोटः— **मैं पूरी तब्लीग़ियत को आवाज़ देकर और उन्हें अल्लाह का वास्ता देकर, उन्हें अल्लाह की क़सम देकर कहता हूँ कि**

अगर ज़करिया साहब की इस बात को वो भी सही समझते हैं तो मुझे अहमद बिन हंबल (रह0) की किताब में कहीं भी इस बात को दिखलाएं कि 300 रकअ़त नफ़िल रोज़ाना पढ़ते थे और जुबैर पूरी कुरआन एक ही रकअ़त में पढ़ लेते थे। क्यातब्लीग़ी जमाअ़त में भी कोई ऐसा है? ज़करिया साहब फ़ज़ाएल–ए–नमाज़ लिखने बैठे थे या फ़ज़ाएल–ए–गप्प?

7. ''अबू सन्नान कहते हैं खुदा की क़सम मैं उन लोगों में था जिन्होंने साबित को दफ़न किया। दफ़न करते हुए लहद की एक ईंट गिर गयी तो **मैंने देखा कि वो खड़े नमाज़ पढ़ रहे हैं।** मैंने अपने साथी से कहा देखो ये क्या हो रहा है उसने मुझे कहा चुप हो जाओ। जब दफ़न कर चुके तो उनके घर जाकर उनकी बेटी से पूछा कि साबित का अ़मल क्या था? उसने कहा क्यूॅ पूछते हो? हमने क़िस्सा बयान किया। उसने कहा कि **50 बरस शब–ए–बेदारी** (रात जगा) की और सुबह को हमेशा ये दुआ़ करते थे कि– **या अल्लाह अगर तू किसी को ये दौलत अ़ता करे कि वो क़ब्र में नमाज़ पढ़े तो मुझे भी अ़ता फ़रमा''।**

नोटः—ये लोग मिट्टी देने गये थे या मर्डर करने? अरे भाई, जब नमाज़ पढ़ते देखा तो उन्हें बाहर निकालाना चाहिये कि उन्हें दफ़न कर देना चाहिये? अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) तो फ़रमाएं कि **जो पूरी—पूरी रात जागकर इबादत ही करता रहे वो हममें से नहीं यानि कि मुसलमान ही नहीं, और यहां तो ज़करिया साहब बाक़ायदा उस शख़्स की दुआ़ भी अल्लाह से कुबूल करवाकर क़ब्र में ही नमाज़ भी पढ़वा रहे हैं। अल्लाह ही जाने कि ज़करिया साहब के क़ब्र में इस वक़्त क्या हो रहा होगा, जो कि इतनी गुमराहकुन किताब उम्मत में फैलाकर गये हैं।**

8. ''सअ़ीद बिन मुसय्यिब के बारे में लिखा है कि **50 बरस तक इशा और सुबह की नमाज़ एक ही वुजू से पढ़ी** और अबू मोअ्तमिर के बारे में लिखा है कि **40 बरस तक ऐसा ही किया''।**

9. ''हज़रत इमाम–ए–आज़म (रह0) के बारे में तो बहुत कसरत से ये चीज़ नक़ल की गयी कि **30 या 40 या 50 बरस इशा और सुबह की नमाज़ एक वुज़ू से पढ़ी ....''।**

10. ''हज़रत इमाम शाफ़ओ़ी (रह0) साहब का माअ़्मूल था कि रमज़ान में **60 कुरआन शरीफ़ नमाज़ में पढ़ते थे ....''।**

11. ''अबू अ़ताब सुलमी **40 बरस तक रात भर रोते थे और दिन को हमेशा रोज़ा रखते थे''।** (नं0 6 से लेकर नं0 11, तक के सारे हवाले, फ़ज़ाएल–ए–नमाज़, तीसरा बाब–खुशूअ़ व खुज़ूअ़ के बयान में, पेज–246, 247)

नोटः– इन अईम्मः के नाम से जो–जो गप्पें ज़करिया साहब लिखकर गये हैं और उन पर जो बोहतान लगाया है। मैं समझता हूँ उसका ख़ामियाज़ा तो उन्हें भुगतना ही पड़ेगा पर आ़म तब्लीग़ी भाईयों को न जाने क्या हो गया है कि इस झूट के पुलिन्दे को लिये–लिये, घर–परिवार छोड़कर, नगर–नगर, डगर–डगर, बस्ती–बस्ती, क़रिया–क़रिया, चिल्ले काट–काटकर लोगों तक इसकी झूटी ताअ़्लीमात को फैलाकर अपनी आख़िरत बिगाड़ रहे हैं और अपने ही हाथों अपने लिये जहन्नम

का सामान तैयार कर रहे हैं। अल्लाह तआ़ला इन्हें सद्बुद्धि और हिदायत अ़ता करे। (आमीन)

12. ''हज़रत जैनुल आबिदीन (रज़ि0) **रोज़ाना 1000 (एक हजार) रकअ़त पढ़ते थे।''** (फ़ज़ाएल–ए–नमाज़, पेज–261)

नोटः– अब बताईये, ज़करिया साहब ने तो झूठ की हद ही कर दी, न जाने किस तरह का उनका **दिमाग़ी मर्ज़** था। अरे भई, ज़रा अ़क्ल से भी काम लीजिये, ज़करिया साहब के साथ–साथ **क्या आप लोगों का भी दिमाग़ ख़राब हो गया है?** एक दिन में **24 घण्टे** होते हैं यानि कि **कुल 1440 मिनट,** अगर **एक रकअ़त 1) (डेढ़) मिनट का** भी रखें तो **1000 हजार रकअ़त होगी 1500 मिनट में यानि कि 25 घण्टों में**, फिर ये तो रही नफ़िल नमाज़ें। अब 5 वक़्त की नमाज़ें अलग, खाना–पीना अलग, पेशाब–पाखाना अलग। **ये कैसे मुमकिन है?** ज़रा आप ही लोग तास्सुब और ज़िद व हठधर्मी छोड़कर सोचें। क्या ऐसी झूटी बातें लिखकर हम नमाज़ के फ़ज़ाएल बयान कर सकते हैं? **क्या अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) से बढ़कर**

कोई इबादत गुजार हो सकता है? क्या उन्होंने भी कभी ऐसा किया या बताया है? क्या ऐसी ताअ़लीम कुरआन–ओ–हदीस में कहीं हो सकती है? ये ज़करिया साहब मुसलमान थे या फिर..... ....?

13. ''हज़रत ओवैस करनी मशहूर बुजुर्ग और अफ़ज़ल तरीन ताबअ़ी हैं। बाज़ मर्तबे रूकूअ़ करते और **तमाम रात उसी में गुज़ार देते।** कभी सज्दा में यही हालत होती कि **तमाम रात एक ही सज्दे में गुजार देते।** (फ़ज़ाएल–ए–नमाज़, पेज–261)

नोटः– मेरे तब्लीग़ी भाईयो! कभी आप भी ट्राई करके देखो, अपने ज़करिया साहब की इन ताअ़लीमात पर। कभी आपने 40 बरस तो छोड़िये 40 दिन भी, मैं कहता हूँ कि 40 दिन भी छोड़िये 4 दिन भी एक ही वुजू से इशा व सुबह की नमाज़ पढ़ी है? क्या आपके जमाअ़त में कोई भी मॉ का लाल इस दर्जे तक नहीं पहुॅचा? क्या कभी एक ही रूकूअ़ या सज्दे में आपने भी पूरी रात गुज़ारी है? न जाने वुजू था कि पहाड़......कमबख़्त टूटने का नाम ही नहीं लेता था।

ऐसे ही न जाने कितने ही झूठे वाक़्यात इस झूठी और गुमराहकुन किताब में भरे पड़े हैं। ये तो चावल के चन्द नमूने हैं जो मैं आपकी ख़िदमत में पेश कर रहा हूँ। जिसे अपनी आख़िरत बिगाड़नी हो और जहन्नम से प्यार हो वो इस गुमराह जमाअ़त की गुमराह किताब 'फ़ज़ाएल–ए–अ़ामाल' की पैरवी करे। हमारा काम है हक़ को बताना और गुमराही को जतलाना। हिदायत देना, ये अल्लाह के हाथ में है।

हमें कहा जाता है कि ये फ़ित्ना फैला रहे हैं। अरे, फ़ित्ना तो ये बड़े–बड़े ओ़लमा और वली समझे जाने वालो ने अपनी भैंस जैसी मोटी–मोटी किताबों में लिखकर फैलाया है। हम तो नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की भोली–भाली उम्मत को इनके फ़ित्नों से बचाने और कुरआन–ओ–सुन्नत की ताअ़्लीमात को अ़ाम करने के लिये उठे हैं। ये फ़ित्ना फैलाना नहीं है, अगर इसे फ़ित्ना फैलाना समझते हैं तो पहले इन गुमराह किताबों को कुरआन–ओ–हदीस से सही साबित करिये और अगर नहीं कर सकते (इन्शाअल्लाह क़यामत तक नहीं कर

सकते हो) तो फिर इन्हें छोड़कर मुसलमानों को सिर्फ़ और सिर्फ़ वो बातें बतलाओ जो रब के कुरआन या मदीने वाले के फ़रमान में मौजूद हैं, बस। हमें जन्नत उसी पर चल कर मिल सकती है।

तब्लीग़ी जमाअ़त को दरअसल अंग्रेजों ने जिहाद की ''स्प्रिट'' को ख़त्म करने के लिये पैदा किया था जिसके बारे में दलाएल मौजूद हैं। फ़िलहाल एक छोटा सा नमूना मैं **''फ़ज़ाएल –ए–आ़माल से ही''** पेश कर रहा हूँ।

14. ''हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) का इरशाद है कि जो तुम में से आजिज़ हो, रातों को मेहनत करने से और कंजूसी की वजह से माल भी ख़र्च न किया जाता हो (यानि नफ़्ली सद्क़ात) और बुज़दिली की वजह से **जिहाद में भी शिर्कत न कर सकता हो,** उसको चाहिये कि अल्लाह का ज़िक्र कसरत से (अत्यधिक) किया करे''।

(फ़े) :– यानि हर क़िस्म की कोताही जो **नफ़्ली इबादतों में** होती है, अल्लाह के ज़िक्र की कसरत उसको दूर कर सकती

है....''   (फ़ज़ाएल —ए—ज़िक्र,

नम्बर—14, पेज—337)

नोटः— <u>देखा आपने! ''जिहाद'' जैसी फ़र्ज़ इबादत को ज़करिया साहब नफ़िल में शुमार करके उसकी अहमियत को किस तरह घटा रहे हैं।</u>

आईये, अब आपको ज़करिया साहब की इस गुमराहकुन किताब ''फ़ज़ाएल—ए—आ़माल''या यूँ कहिये कि ''बरबादी—ए—आ़माल'' में एक ऐसा वाक़्या दिखाऊँ जिस पर अगर कोई मुसलमान यक़ीन करे तो वो इल्म ग़ैब को अल्लाह के सिवा दूसरे में तस्लीम करके अपना ईमान भी खो बैठे।

15. ''शेख अबू यज़ीद कुर्तुबी फ़रमाते हैं— मैंने ये सुना कि जो शख़्स सत्तर हज़ार मर्तबा ला—इलाह—इल्लल्लाह पढ़े, उसको दोज़ख़ की आग से निजात मिले। मैंने ये ख़बर सुनकर एक निसाब यानि सत्तर हजार की तायदाद अपनी बीवी के लिये भी पढ़ा और कई निसाब ख़ुद अपने लिये पढ़कर आख़िरत के लिये ज़ख़ीरा बनाया। हमारे पास एक नवजवान

रहता था जिसके बारे में यह मशहूर था कि **ये ‘साहब–ए–कश्फ़’ है, जन्नत–दोज़ख़ का भी इसको कश्फ़ होता है।** मुझे उसके सही होने में कुछ शंका था। एक मर्तबा वो नवजवान हमारे साथ खाने में शरीक था कि अचानक उसने एक चीख़ मारी और सांस फूलने लगा और कहा कि **‘मेरी मॉ दोज़ख़ में जल रही है, उसकी हालत मुझे नज़र आयी’** कुर्तुबी कहते हैं कि मैं उसकी घबराहट देख रहा था। मुझे ख़्याल आया कि एक निसाब उसकी मॉ को बख़्श दूँ, जिससे उसकी सच्चाई का भी मुझे तजुर्बा हो जायेगा। चुनान्चे मैंने एक निसाब सत्तर हज़ार का उन निसाबों में से जो अपने लिये पढ़े थे उसकी मॉ को बख़्श दिया, **‘मैंने अपने दिल में चुपके ही से बख़्शा था और मेरे उस पढ़ने की ख़बर भी अल्लाह के सिवा किसी को न थी’** मगर वो नवजवान फ़ौरन कहने लगा कि चचा **‘मेरी मॉ दोज़ख़ से हटा दी गयी।’** कुर्तुबी कहते हैं कि मुझे इस क़िस्सा से दो फ़ायदे हुए। एक तो उस बरकत का जो सत्तर हज़ार की तायदाद पर मैंने सुनी थी उसका तजुर्बा

हुआ, दूसरे उस **नवजवान की सच्चाई का यक़ीन हो गया**।

(फ़ज़ाएल –ए–ज़िक्र नं0 17 के फ़ायदे यानि कि ''फ़े'' में, पेज–387)

नोटः– देखा आपने गुरू गुड़ ही रहा चेला शक्कर हो गया। कुर्तुबी को तो शंका ही रही और नवजवान जन्नत और दोज़ख़ के नज़ारे देख रहा था। वाह रे ज़करिया साहब! और वाह रे तब्लीग़ी जमाअ़त वालों की खोपड़ी। पता नहीं कब इन्हें अ़क़्ल आयेगी और ये ऑखें खोलकर इस किताब की ऊल–जलूल बातों पर तवज्जोह देंगे और इसकी हक़्क़ानियत को जॉचेंगे।

आईये, अब अपने दिलों पर हाथ रख लीजिये और देखिये कि इस नामाकूल किताब जिसे 'फ़ज़ाएल–ए–आमाल' के नाम से ज़करिया साहब ने लिखा है और जिसे मैं 'बरबादी–ए–आ़माल' कहता हूॅ, में किस तरह से **अल्लाह के नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की शान में बेजा अल्फ़ाज़ लिखकर उनकी तौहीन की गयी है।**

लीजिये – पेश है, एक लम्बे वाक़्या के आख़िरी अल्फ़ाज़।

16. ''.......उसने कहा मैं अपनी मॉ के साथ हज को गया था, मेरी मॉ वहीं रह गयी (यानि मर गयी) उसका मुॅह काला हो गया और उसका पेट फूल गया, जिससे मुझे ये अन्दाज़ा हुआ कि कोई बहुत बड़ा सख़्त गुनाह हुआ है इससे, मैंने **अल्लाह जल्ले शानहू की तरफ़ दुआ़ के लिये हाथ उठाये** तो मैंने देखा, कि तहामा (हिजाज़) से एक अब्र (बादल) आया, **उससे एक आदमी ज़ाहिर हुआ।** उसने अपना मुबारक हाथ मेरी **मॉ के मुॅह पर फेरा,** जिससे वो बिल्कुल रोशन हो गया और **पेट पर हाथ फेरा** तो सूजन बिल्कुल जाता रहा। मैंने उनसे अ़र्ज़ किया कि आप कौन हैं कि मेरी और मेरी मॉ की मुसीबत को दूर किया? उन्होंने फ़रमाया कि मैं तेरा नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) हूॅ ....।''(फ़ज़ाएल–ए–दरूद शरीफ़, पॉचवीं फ़सल–दरूद शरीफ़ के मुताल्लिक हिकायत, में क़िस्सा नं0–46, पेज–765)

नोटः– ये ज़करिया साहब को क्या कहूॅ? अल्लाह जाने वो मुसलमान थे या कि ....? जो नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) अपनी ज़िन्दगी में किसी पराई औ़रत की ऊॅगली भी

देखना गंवारा न किया हो वो अपने वफ़ात के बाद आकर एक फ़ासिक़, गुनहगार **औ़रत के मुॅह पर और पेट पर हाथ फेर सकते हैं?** हर्गिज़ नहीं? ये कोई भी मुसलमान मानना तो दूर सोच भी नहीं सकता है और इस तरह के नाज़ेबा अल्फ़ाज़ ज़करिया साहब लिखकर दरूद के फ़ज़ाएल बयान कर रहे हैं।

फिर, उस लड़के ने अल्लाह जल्ले शानहू की तरफ़ दुअ़ा के लिये हाथ उठाये और फ़रियाद पूरी करने नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) पहॅुच गये, वो भी बादलों में सवार होकर ....। उन्हें कैसे पता चला कि कोई फ़रियादी, फ़रियाद कर रहा है? और क्या अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) भी लोगों की फ़रियाद पर इस तरह से हाज़िर होकर उनकी दुअ़ा भी सुनते हैं? क्या ये रामायण का सीरियल चल रहा है कि जैसे हिन्दुओं के राम, हनुमान बादलों में सवार होकर आते–जाते हैं। अगर कोई हिन्दू इसे पढ़कर कहे कि जब तुम्हारे पैग़म्बर बादलों में आ सकते हैं तो हमारे राम, हनुमान क्यॅू नहीं? **तो आप क्या जवाब देंगे?** मेरे तब्दलीग़ी

भाईयो! होश में आओ और ज़रा दिल पर हाथ रखकर सोचो। ये ज़करिया साहब कोई नबी नहीं थे कि उनकी लिखी हर–हर बात सच व सही होगी और न ही अल्लाह तआ़ला के यहां और न ही क़ब्र में तुम्हारा साथ देंगे। इन गोरख़धन्धों से बाहर निकलिये और सिर्फ़ व सिर्फ़ कुरआन–ओ–सुन्नत को पढ़िये–पढ़ाईये और अ़मल करिये और उसी की तब्लीग़ करिये। जन्नत में जाना है तो उसी की पैरवी करिये– सिर्फ़ उसी की पैरवी।

17. **'एक शख़्स** कहते हैं कि मैं हज़रत मुमशाद दीनूरी के पास बैठा था। **एक फक़ीर** आया और कहने लगा यहां कोई **पाक–साफ़ जगह** ऐसी है जहॉ **कोई मर जाये।** उन्होंने **एक जगह** इशारा किया, जहां पानी का चश्मा भी था। वो उसके क़रीब गया, वुज़ू किया और नमाज़ पढ़ी उसके बाद पांव फैलाकर लेट गया **और मर गया''।**

(भाग 2, फ़ज़ाएल–ए–सदक़ात, पेज–475)

नोटः– <u>देखा आपने! ये तब्लीग़ी जमाअ़त का फ़क़ीर? जिसे अपनी मौत का भी इल्म हो गया जबकि कुरआन में साफ़–साफ़ अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है कि 5 बातों का इल्म अल्लाह के सिवा किसी को नहीं, जिसमें से 'एक' ये भी है कि 'किसकी मौत कब आयेगी'? ये अल्लाह के सिवा किसी को नहीं मालूम। इसके अलावा क़यामत कब आयेगी? पानी कब और कहॉ बरसेगा? इन्सान कल क्या करेगा? मॉ के पेट में क्या है? वग़ैरह–वग़ैरह भी अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता। ज़्यादा तफ़्सील के लिये देखिये कुरआन शरीफ़ के पारः 21 सूरः लुकमान, आयत–34।</u>

अब बताईये, मेरे तब्लीग़ी भाईयो! अल्लाह का कुरआन मानोगे या ज़करिया का फ़ज़ाएल–ए–आ़माल?

मैं आप तब्लीग़ी भाईयों पर कुरआन की आयतें और हदीसें पेश करके हुज्जत क़ायम कर रहा हूँ। आप, अब ये कहकर नहीं बच सकते कि हक़ हमें मालूम नहीं था। हक़ और बातिल आपके सामने साफ़–साफ़ खोलकर बयान किया जा रहा है।

तास्सुब छोड़कर हक़ (कुरआन–ओ–सुन्नत) की पैरवी करें और अपनी आख़िरत संवारें।

18. ''हज़रत मुमशाद दिनूरी के इन्तिक़ाल के वक़्त एक बुज़ुर्ग उनके पास बैठे थे। वो उनके लिये जन्नत के मिलने की दुआ़ करने लगे। हज़रत मुमशाद **हंसे** और फ़रमाया कि **30 बरस से जन्नत अपनी सारी ज़ीनतों समेत मेरे सामने आती रही। मैंने एक मर्तबा भी उसको निगाह भरकर नहीं देखा** मैं तो जन्नत के **मालिक का आरज़ूमन्द हूँ।** **(भाग–2, फ़ज़ाएल–ए–सदक़ात, पेज–476)**

नोटः– अब लीजिये, सारी दुनिया के मुसलमान जन्नत के पाने के तलबगार हैं कि जहन्नम से बच जायें और जन्नत मिल जाये पर ये तब्लीग़ी बुज़ुर्ग जन्नत में नहीं रहना चाहते हैं बल्कि जन्नत के मालिक के मुश्ताक़ यानि आरज़ूमन्द हैं। यानि की अल्लाह तआ़ला के साथ रहना चाहते हैं। वाह रे! तब्लीग़ी ताअ़लीम।

आईये–अब आपको एक महाझूटा वाक़्या दिखलाऊँ

19. ''एक कफ़न चोर था। वो क़ब्रें ख़ोदकर कफ़न चुराया करता था। उसने एक क़ब्र खोदी तो उसमें एक शख़्स ऊँचे तख़्त पर बैठे हुए दिखें। कुरआन पाक उनके सामने रखा हुआ, वो कुरआन शरीफ़ पढ़ रहे हैं और उनके तख़्त के **नीचे एक नहर चल रही है।** उस शख़्स पर ऐसी दहशत तारी हुई कि बेहोश होकर गिर पड़ा। **लोगों ने उसको क़ब्र से निकाला।** 3 दिन बाद होश आया। **लोगों ने** क़िस्सा पूछा, उसने सारा हाल सुनाया। कुछ **लोगों ने उस क़ब्र को** देखने की तमन्ना की, **उससे पूछा कि क़ब्र बता दे।** उसने इरादा भी किया कि उनको ले जाकर क़ब्र दिखाऊँ। रात को ख़्वाब में क़ब्र वाले बुजुर्ग को देखा, कह रहे हैं अगर तूने **मेरी क़ब्र बतायी** तो ऐसी आफतो में फॅस जायेगा कि याद करेगा। उसने अहद किया कि नहीं बताऊँगा। (भाग–2, फ़ज़ाएल–ए–सदक़ात, पेज–477,478)

नोटः– कुछ ग़ौर किया आपने? लोगों ने उसको क़ब्र से निकाला। फिर उससे पूछा कि क़ब्र बता दें। अरे, जिस क़ब्र से उसे निकाला, उसी क़ब्र को पूछने का क्या मतलब? इसके

अलावा एक बात और क़ब्र में देखा कि ऊँचे तख़्त पर बैठे हैं और नीचे एक नहर चल रही है। क़ब्र था या कि ....? तब्लीग़ी भाईयो! आप लोगों को सलीम–जावेद जैसा राइटर पकड़ना चाहिये था या फिर रामसे ब्रदर्स वालों की हॉरर कहानियॉ ....। **ये (शायद) मर्ज़–ए–दिमाग़ वाले ज़करिया साहब के चक्कर में पड़कर आप लोग भी अपनी जग–हंसाई खुद करा रहे हैं। ये मज़हबी किताब है या कि झूटों का पुलिन्दा?**

20. ''शेख़ अबू याकूब सनूसी कहते हैं कि मेरे पास एक मुरीद आया और कहने लगा कि मैं कल को ज़ोहर के वक़्त मर जाऊॅगा। चुनान्चे दूसरे दिन ज़ोहर के वक़्त मस्जिद–ए–हराम में आया, तवाफ़ किया और थोड़ी दूर जाकर मर गया। मैंने उसको गुस्ल दिया और दफ़न किया। जब मैंने उसको क़ब्र में रखा तो उसने ऑखें खोल दी। मैंने कहा मरने के बाद भी ज़िन्दगी है? कहने लगा कि मैं ज़िन्दा हॅू और अल्लाह का हर आ़शिक़ ज़िन्दा ही रहता है।''

21. **''एक बुजुर्ग** कहते हैं कि मैंने एक मुरीद को गुस्ल दिया **उसने मेरा अंगूठा पकड़ लिया,** मैंने कहा कि मेरा अंगूठा छोड़ दे मुझे मालूम है कि तू मरा नहीं हैं। ये एक मकां है, दूसरे मकां में इन्तिक़ाल है, उसने मेरा अंगूठा छोड़ दिया।''

22. **शेख़ इब्न–उल–जला मशहूर बुजुर्ग हैं।** वो फ़रमाते हैं कि जब मेरे वालिद का इन्तिक़ाल हुआ और उनको नहलाने के लिये तख़्ता पर रखा तो **वो हंसने लगे, नहलाने वाले छोड़ कर चल दिये। किसी की हिम्मत उनको नहलाने की न पड़ती थी। एक और बुजुर्ग** उनके रफीक आये उन्होंने गुस्ल दिया।''(20,21,22 नं0 के सभी हवाले, भाग–2, फ़ज़ाएल–ए–सदक़ात, पेज–478)

नोट:– ये तब्लीग़ी मुर्दे भी बड़े मनचले मालूम पड़ते हैं। कोई अंगूठा पकड़ रहा है तो कोई ऑखें खोलकर बातें भी कर रहा है। एक को तो शायद गुदगुदी लगा दी हो कि वो हंसने लगा, नहलाने वाले छोड़कर भागे, लेकिन एक दूसरा तब्लीग़ी आया और उन्हें गुस्ल दिया कि नहीं बेटा तुम्हें नहाना ही पड़ेगा। ये सब क्या बकवास लिखे गये हैं? और इन्हें आप सच भी मान

रहे हैं, अगर कहीं हुकूमत को पता चले तो वो तब्लीग़ी वालों को दफ्ा 302 में सज़ा न देने लगे कि तुम अपने ज़िन्दा साथियों को उठा–उठाकर दफ़न कर रहे हो जब कि वो हंस रहे हैं, बातें कर रहे हैं, अंगूठे पकड़ रहे हैं। **अल्लाह–इन तब्लीग़ी जमाअ़त वालों के कुन्द ज़ेहन को दुरूस्त फ़रमाये। (आमीन)**

आईये, अब ज़रा चौदह सदी के तब्लीग़ी नबी(मआ़ज़अल्लाह) से आपकी मुलाक़ात कराऊँ। ये सभी मुसलमान जानते हैं कि जिब्रील (अ़लै0) सिर्फ़ नबियों के पास अल्लाह की वह्‌यी लेकर आते थे और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के बाद अब क़यामत तक वो किसी के पास नहीं आयेंगे, लेकिन ज़रा 'फ़ज़ाएल –ए–आ़माल' के इस वाक़्या को भी पढ़िये–

23. ''हसन बिन हई कहते हैं कि मेरे भाई अ़ली (रह0) का जिस रात में इन्तिक़ाल हुआ, उन्होंने मुझे आवाज़ देकर पानी मांगा। मेरी नमाज़ की नियत बंध रही थी, मैं सलाम फेरकर,

पानी लेकर गया। वो फ़रमाने लगे कि मैं तो पी चुका। मैंने कहा आपने कहां से पी लिया, घर में तो मेरे और आपके सिवा कोई और है नहीं? कहने लगे कि हज़रत जिब्रील (अ़लै0) अभी पानी लाये थे वो मुझे पानी पिला गये........।'' (भाग–2, फ़ज़ाएल–ए–सदक़ात, पेज–481)

ये तो रहे जिब्रील (अ़लै0) से पानी पीने वाले, ज़रा इसे भी पढ़िये

24. ''मैं सफ़र से वापस आया तो उनके भाई हसन बिन स्वालेह के पास ताज़ियत के लिये गया, मुझे वहां जाकर रोना आ गया। वो कहने लगे कि रोने से पहले उनके इन्तिक़ाल की कैफ़ियत सुनो कैसे **लुत्फ़ की बात है।** जब उन पर नज़अ् की तकलीफ़ शुरू हुई तो मुझसे पानी मांगा। मैं पानी लेकर गया कहने लगे मैंने तो पी लिया। मैंने पूछा कि किसने पिलाया? कहने लगे **हुज़ूर–ए–अ़क्दस (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) फ़रिश्तों की बहुत सी सफ़ों के साथ तशरीफ़ लाये थे और मुझे पानी पिला दिया........।''**

(भाग–2, फ़ज़ाएल–ए–सदक़ात, पेज–481, 482)

नोटः– लीजिये, अभी तक तो जिब्रील (अ़लै0) के ही चक्कर में थे, यहां तो खुद मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) पानी पिलाने आ गये।

ज़करिया साहब को भी कोई पानी पिलाने आया था या नहीं?

आईये, अब आपको तब्लीग़ी बुजुर्ग पर वह्यी नाज़िल होने का वाक़्या दिखलाऊँ।

25. ''**एक बुजुर्ग** का इन्तक़ाल होने लगा तो अपने ख़ादिम से कहा कि **मेरे दोनों हाथ बांध दे और मेरा मुँह ज़मीन पर रख दे।** उसके बाद कहने लगे कि **कूच का वक़्त** आ गया, न तो मैं गुनाहों से बरी हूँ, न मेरे पास कोई उ़ज़्र है जो माअ़ज़रत मैं पेश कर दूँ। न कोई ताक़त है जिससे मदद चाहूँ। बस मेरे लिये तो **तू ही है–मेरे लिये तो तू ही है।** यही कहते–कहते एक चीख़ मारी और इन्तिक़ाल हो गया, **ग़ैब से आवाज़ आयी कि, इस बन्दे ने अपने मौला के सामने आजिज़ी की उसे कुबूल कर लिया'।** (भाग–2,फ़ज़ाएल–ए–सदकात, पेज–484)

नोटः– देखा आपने? अब आप तब्लीग़ी लोग भी अपने मरने वालों के हाथ बांध कर मुॅह ज़मीन पर रख दिया करें तो शायद उनके लिये भी अल्लाह की तरफ़ से डायरेक्ट ग़ैब से आवाज़ आ जाये।

(मआज़अल्लाह)

होश में आओ तब्लीग़ी भाईयो! होश में, तुम्हारी ईमानी ग़ैरत कहॉ चली गयी है? कि इस तरह के बेबुनियाद, अल्लम–ग़ल्लम और झूटे वाक़्यात को सही समझकर और इस गुमराह किताब (फ़ज़ाएल–ए–आ़माल) को एक दीनी किताब समझकर इसकी तब्लीग़ में लगो हो। अल्लाह के लिये दोस्तों, अल्लाह के लिये होश के नाखून लो।

आईये, एक–आध वाक़्यात और आपके सामने पेश करके अपनी बात ख़त्म करूॅ। वैसे तो इस बस किताब में सैकड़ों झूटे वाक़्यात और झूटी बातें मौजूद हैं। जिनमें से मैंने ये तो सिर्फ़ चन्द नमूने ही पेश किये हैं।

26. ''सय्यद अहमद रिफ़ाअ़ी मशहूर बुजुर्ग बड़े सूफियों में हैं, उनका क़िस्सा मशहूर है कि जब सन् 555 हि0 में हज से फ़ारिग़ होकर ज़ियारत के लिये हाज़िर हुए और क़ब्र–ए–अतहर के सामने खड़े हुए तो ये दो शे'र पढ़े। अनुवाद –**''दूरी की हालत में मैं अपनी रूह को ख़िदमत–ए–अक़्दस भेजा** करता था वो मेरी नायब बनकर आस्तान–ए–मुबारक चूमती थी। अब **जिस्मों की हाज़िरी** की बारी आयी है **अपना मुबारक हाथ अ़ता कीजिये** ताकि मेरे होंठ उसको चूमें।''

इस पर क़ब्र शरीफ़ से **मुबारक हाथ बाहर निकला** और उन्होंने **उसको चूमा** (अल–हादीयुल सुयूती) कहा जाता है कि उस वक़्त तकरीबन **नब्बे हज़ार का मजमा मस्जिद–ए–नबवी में था, जिन्होंने इस वाक़्या को देखा** और हुजूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के **मुबारक हाथ की ज़ियारत** की, जिनमें हज़रत महबूब–ए–सुब्हानी, कुतुब–ए–रब्बानी **शेख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी** नूरूल्लाह मरक़दहू का नामे नामी भी ज़िक्र किया जाता है''। (भाग–2, फ़ज़ाएल–ए–हज, किस्सा नं0 12, पेज–166,167)

नोट:– अब बताईये, सन् 555 हि0 का वाक़्या। मस्जिद–ए–नबवी में 90 हज़ार लोग। जबकि आज, मस्जिद–ए–नबवी इतनी बड़ी बना दी गयी है, फिर भी उसमें 90 हज़ार लोग नहीं आ सकते हैं तो 555 हि0 में कैसे आ गये? और अगर मान भी लें कि 90 हज़ार लोगों ने उस मुबारक हाथ की ज़ियारत की, तो ये बताईये कि हाथ था या कुतुबमीनार? कितना ऊँचा हाथ निकला था कि 90 हजार लोगों ने देख लिया? **कोई मॉ का लाल** जो कि तब्लीग़ी जमाअ़त का हो इस वाक़्या को शेख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी (रह0) की किसी भी किताब में दिखला दे तो जानूॅ। अरे भई, इतना अहम् वाक़्या और शेख़ अ़ब्दुल क़ादिर (रह0) ने अपने किसी भी किताब में ज़िक्र नहीं किया।

सय्यद रिफ़ाअ़ी दूरी की हालत में अपनी रूह भेजकर भी ज़िन्दा रहते थे और उनके **'एक'** नहीं, कई जिस्म थे तभी तो **जिस्मों,** की हाज़िरी फ़रमाया। इसके अ़लावा, क़ब्र के पास खड़े होकर फ़रमाया तो नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) सुन

भी रहे हैं, जबकि कुरआन का साफ़–साफ़ ऐलान है कि–**"तुम उनको नहीं सुना सकते जो क़ब्रों में हैं।"** (सूरः फ़ातिर, पारः 23, आयत–22)

अब बताईये, रब का कुरआन सच्चा या ज़करिया का ''फ़ज़ाएल –ए–आ़माल'' सच्चा?

दोस्तो! ये तो चावल के वो चन्द नमूने हैं जो मैंने ज़करिया साहब के 'फ़ज़ाएल–ए–आ़माल' की हांडी में से निकाल कर आपके सामने पेश किये हैं वरना तो पूरी की पूरी हांडी ही ऐसे न जाने कितने ही चावलों से भरी पड़ी हैं।

एक बार फिर, हम आप सभी दीनी भाईयों को अल्लाह का वास्ता देकर कहते हैं कि आप सभी सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह के कुरआन और मदीने वाले के फ़रमान यानि कि कुरआन–ओ–सुन्नत को ही लाज़िम पकडें और 'बहिश्ती ज़ेवर' या 'फ़ज़ाएल–ए–आ़माल' जैसी बकवास और झूठी किताबों को अपनी ज़िन्दगी से निकालकर बाहर फेंक दीजिये।

आख़िर में अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है कि हम सभी मुसलमानों को ऐसे गुमराहकुन किताबों से महफूज़ रखे तथा सिर्फ़ और सिर्फ़

कुरआन–ओ–सुन्नत पर ही अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

(आमीन)

,,,,,,,,,,